तेवरी-संकलन

देश खण्डित हो न जाए

दर्शन बेजार

देश खण्डित हो न जाए

(तेवरी-संकलन)

दर्शन बेजार

सार्थक-सृजन प्रकाशन, अलीगढ़।

देश खण्डित हो न जाए

(तेवरी–संकलन)

कवि-दर्शन बेज़ार

प्रकाशक : सार्थक–सृजन प्रकाशन
१५/१०६, ईसा नगर, अलीगढ़-२०२००१

संस्करण : प्रथम, १९८८

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक : शारदा प्रिन्टर्स, राठी भवन, सासनी गेट, अलीगढ़–२०२००१

DESH KHANDIT HO NA JAYE (TEWRI-SANKALAN)

देश खण्डित हो न जाए

तुहमतें मेरे न सर पर दीजिए।
झुक न पायेगा, कलम कर दीजिए॥

दुख-दर्द बाँटने औरों के
जो अंगारों पर सोये हैं।
प्राणों की आहुति देकर भी
जो अंधकार में खोये हैं।
जो हैं सच्चे इतिहास पुरुष
पर, गाथा कहीं न वर्णित है।
उन सब अज्ञात शहीदों को
मेरा यह यज्ञ समर्पित है।

जिसकी कविता
न देहिक गान है
न दरबारी राग है
न मानसिक अय्याशों का
साहित्यिक व्याख्यान है
और न किसी दल का बैनर है
बल्कि,
एक ऐसी आग है
जिसकी सच्चाई
सबसे होकर गुजरती है ।

मानव सापेक्ष कविता के
ऐसे एकमात्र कवि
स्व०सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'
की स्मृति में--



इसे मैं आपको सौंप रहा हूँ।

-डॉ० रवीन्द्र भ्रमर

श्री दर्शन बेज़ार की नयी रचनाओं का यह संग्रह 'देश खण्डित हो न जाए' मैं आपको सौंप रहा हूँ। मैंने माना कि आप एक विचार-शील प्रबुद्ध व्यक्ति हैं, इस देश की युवा पीढ़ी के प्रतीक हैं, युयुत्स हैं और आपके मन में आज के समाज/आज के मनुष्य के लिए-उसके वर्त्तमान और भविष्य के लिए-एक आकुल चिन्ता तथा एक गहरी समझ है। आपके व्यक्तित्व की जागरूकता और संवेदनशीलता के प्रति यदि मेरा अनुमान सही है तो यह काव्य संग्रह आप ही के लिए है। अस्तु, मैं इसे आपको सौंप रहा हूँ।

ये 'सामान्य' रचनाएँ नहीं हैं। 'सामान्य' से मेरा अभिप्राय उस कोटि की रचनाओं से है- जो मात्र मनोरंजन, दिमागी ऐय्याशी के लिए रची जाती हैं और जिनमें परम्परा का एक सतही पिष्टपेषण होता है। ये रचनाएँ तेवरीआन्दोलन से जुड़ी हुई हैं और नयी कविता के तेवरी-पक्ष का सही प्रतिनिधित्व करती हैं। इस दृष्टि से संग्रह की पहली रचना के तीन बन्द उल्लेख्य हैं :—

"आदमी की हर कहानी दुखभरी लिखनी पड़ी।
बात कहनी थी, अतः खोटी-खरी लिखनी पड़ी ॥
पंचतारा होटलों की दावतें, उनके कथन,
किन्तु मुझको तो वतन की भुखमरी लिखनी पड़ी ॥
जब ग़ज़ल से पोंछ पाया मैं, न आँसू की व्यथा,
तब मुझे 'बेज़ार' होकर तेवरी लिखनी पड़ी ॥"

इन पंक्तियों में कवि ने अपने मन्तव्य और रचनागत सरोकार को स्पष्ट कर दिया है। आज के आदमी की व्यथा-कथा, सामान्य जन के जीवन की त्रासदी, लूट और भुखमरी की बखिया उधेड़ना ही कवि का लक्ष्य है। 'ग़ज़ल', (जिसे आमतौर पर इश्क़िया शायरी समझा जाता है) अथवा प्रेमगीत से मानवता के आँसू नहीं पोंछे जा सकते। अतः कवि 'तेवरी' लिखने की अनिवार्यता महसूस करता है। मैं 'तेवरी' को पीड़ित-शोषित जन के आक्रोश और क्रान्ति की वाणी मानता हूँ। तेवरी-आन्दोलन के युवा रचनाकारों ने 'ग़ज़ल' के इश्क़िया रचाव को तोड़ा और उसे जन आक्रोश तथा व्यवस्था-परिवर्तन के तेज़ औज़ार के रूप में बरतना शुरू किया। श्री दर्शन बेज़ार इस प्रवृत्ति के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं और उनका यह संग्रह इसका एक ताज़ा उदाहरण है।

क्रान्तिधर्मा कवि, शहीदों के प्रति श्रद्धानत होता है। 'बेज़ार' का यह संग्रह शहीदों को समर्पित है :—

जो हैं सच्चे इतिहास-पुरुष
पर, गाथा कहीं न वर्णित है।
उन सब अज्ञात शहीदों को
मेरा यह यज्ञ समर्पित है ॥

क्रान्तिधर्मा कवि प्रेम और शृंगार के रोमानी भावलोक में कल्पना की ऊँची उड़ान नहीं भरता। वह यथार्थ की ठोस धरती पर संचरण करता है :—

व्यर्थ है अभिव्यंजना शृंगार की
चाँदनी मेहमान है दिन चार की।
नायिका जो दिवस भर भूखी रही
क्या करेगी अर्चना अभिसार की ?

रोटियाँ पहले मुहैया कीजिए
फिर ग़ज़ल फरमाइएगा प्यार की।

'तेवरी' आन्दोलन का कवि चूँकि क्रान्ति का पक्षधर है, इसलिए वह आमआदमी को एकता का पक्षधर है :—

फूट के अब पाँव हम जमने न देंगे
एकता के वृक्ष को कटने न देंगे।

तेवरी–कवि धर्म और साम्प्रदायिकता के कुत्सित रूप पर खुल कर चोट करता है—

यह कैसा उन्माद धर्म का ?
घर-घर वाद-विवाद धर्म का।

* * *

खून इन्साँ का सड़क पर बह रहा है
धर्म की हिंसक कहानी कह रहा है।

* * *

घायल हुईं ऋचाएँ, ज़ख़्मी हैं आयतें
दीवार पर लिखी हैं, लहू ने इबारतें।

श्री दर्शन बेज़ार की रचनाओं में जहाँ एक तल्ख़ी है, आक्रोश है, वहीं दूसरी ओर नौजवान साथियों के लिए एक मर्मभेदी ललकार भी है। सामाजिक एकता के आह्वान के साथ–साथ, जुल्म और अन्याय से जूझने के लिए भी वे प्रेरित करते हैं :—

जीत निश्चित है तुम्हारी, तुम अभी हिम्मत न हारो
काँप सिंहासन उठेगा, तुम तपस्या तो सँवारो।

* * *

अन्याय के शैतान का सिर धड़ से उड़ा दो
हम ज़ुल्म के ख़िलाफ़ हैं, दुनिया को दिखा दो।

दर्शन 'बेजार' के इस संग्रह की कुछ रचनाएँ देश की एकता और

अखण्डता को समर्पित हैं। संग्रह के नाम के आधार पर ऐसा मान लिया जा सकता है कि कवि की मूल चिन्ताधारा यही है—"देश खण्डित हो न जाए"। देश एक बार खण्डित हुआ था, तो उसकी भयावह त्रासदी के काले साये अब तक विद्यमान् हैं। साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता अथवा भाषायी दुराग्रह के आधार पर यह त्रासदी दुबारा न घटित हो। कवि की यह राष्ट्रीय चेतना श्लाघ्य है—

और आगे देश के टुकड़े न हों।
भाइयों में भ्रान्ति से झगड़े न हों।।

* * *

ध्यान रखना नौजवानों! देश खण्डित हो न जाए
शान्ति का पर्याय भारत रक्तरंजित हो न जाए।

जिसे कविता का शिल्प कहते हैं, वह तो मात्र म्यान है, ऊपर का खोल। उस पर मखमल चढ़ाइए, मोती-मानिक टाँकिए, उससे तलवार की कीमत नहीं बढ़ती। जिसे कविता का कथ्य/भाव कहते हैं, वही अस्ल इस्पात है—धारदार तलवार! इस संग्रह की कविताएँ शिल्प, भाषिक संरचना और लयात्मकता की दृष्टि से कमजोर नहीं हैं, बल्कि कथ्य/विषयवस्तु की दृष्टि से धारदार इस्पात हैं। मेरा विश्वास है कि श्री दर्शन बेज़ार के इस संग्रह का काव्यजगत् में अच्छा स्वागत होगा।

— प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़

—: कविकथन :—

सन् १९८५ में सरदार भगतसिंह के बलिदान दिवस, २३ मार्च को मेरा प्रथम तेवरी संग्रह "एक प्रहार: लगातार" प्रकाशित हुआ था, जिसकी मूल प्रेरणा मुझे ३१ अक्टूबर, ८५ को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की जघन्य हत्या तथा उसके बाद विभिन्न नगरों में भड़के (अथवा भड़काए गए) दंगों की विभीषिका से प्राप्त हुई थी। इस समय भी मेरे मस्तिष्क में मेरठ तथा अलीगढ़ (मेरे पूर्व तैनाती के स्थान) की त्रासदी पूरी तरह हावी रही है।

कुछ दिनों बाद मेरा स्थानान्तरण स्वतंत्रता संग्राम के सर्वप्रथम जयघोष करने वाले ऐतिहासिक नगर झाँसी में हो गया तथा ऐसे आवास में रहने का अवसर मिला, जहाँ खिड़की खोलते ही झाँसीदुर्ग की वह प्राचीर दिखाई पड़ने लगती है, जिससे प्रातः स्मरणीया वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई अपने अश्व पर सवार होकर क्रान्ति-कूच के लिए कूद पड़ी थीं। यह दुर्ग मुझमें नए प्रकार के उत्साह का संचार करता है।

इधर कुछ ऐसी शक्तियाँ अपना पैर जमाने लगी हैं, जो देश को बाँटने पर तुली हुई हैं। उन्हें मलाल है कि एशिया के अन्य देशों की भाँति भारत में विस्फोटक तथा विध्वंसक स्थिति क्यों नहीं? हर गली, हर नगर को विभिन्न वर्गों-सम्प्रदायों में बाँटने का प्रयास बराबर जारी है। वोटों का समीकरण सभी के मस्तिष्क में जाति-उपजाति, धर्म, भाषा

प्रान्त आदि का जहर घोल रहा है। बुद्धिजीवियों का गूंगापन और अध-कचरे मस्तिष्क की उद्दण्डता, जगह-जगह अराजकता बढ़ाने में योगदान दे रही है। गरीबी और बेरोजगारी के दर्द को भुनाया जा रहा है। देश की आर्थिक चिन्ता के स्थान पर मात्र अपनी आर्थिक उपलब्धि की चिन्ता ही हमारा एक मात्र उद्देश्य बनकर रह गया है। जरूरत पड़ने पर हम देश की सुरक्षा से संबंधित दस्तावेजों की फोटो प्रतियाँ, विदेशी जासूसों को उपलब्ध करा देते हैं। स्वतंत्रता दिवस पर विदेशी झण्डे फहराये जाते हैं और हम जड़वत् खड़े रहते हैं। तस्करों-सफेदपोशों से हम अपने सम्बन्ध प्रगाढ़ किए जा रहे हैं। वे ही हमारे आदर्श स्वरूप हैं। इतना ही नहीं, जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने गली-गली में "स्वदेशी" का अलख जगाया था और विदेशी वस्तुओं की होली जलाई थी, आज उनके ही वंशज स्वदेशी वस्तुओं को गँवारों की वस्तु कहकर विदेशों में निर्मित वस्तुओं से अपने घर के ड्राइंग रूम को सजाकर, समाज में अपना स्टेटस बढ़ाने में जुट गए हैं। राष्ट्रीय भावना मात्र पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी की चीज बनकर रह गई है।

देश के टुकड़े-टुकड़े करने वाले प्रयासों तथा मात्र भाषणों तक सिमट कर रह जाने वाली राष्ट्रीय भावना को देख कर मैंने यह संग्रह "देश खण्डित हो न जाए" लिखने की आवश्यकता अनुभव की है। अन्य तेवरी-कारों की भाँति मेरे भी आदर्श अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खाँ, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी, हेमू कालानी, सुभाषचन्द्र बोस आदि रहे हैं, तदनुसार ही मेरी रचनाधर्मिता है।

नारीशरीर की एनेटोमी पर महाकवि कालीदास, उमर खय्याम, बिहारी, मिर्जा गालिब आदि सरस्वती पुत्रों ने इतना कुछ लिख दिया है कि अब उसके शरीर का एक भी अंग साहित्य की धरोहर बनने से नहीं बचा है। आप कहीं भी कोई साँस्कृतिक कार्यक्रम देखने जाइये, वहाँ नारीतन, नारी-सानिध्य, नारी वियोग पर कोई न कोई गजल या गीत अवश्य सुनायी पड़ जाएगा। समाज का बहुत बड़ा हिस्सा नारीतन की संरचना, सानिध्य–

सुख लिखने-पढ़ने और सुनने में व्यस्त है। विज्ञापनों में नारी तन नुमाइश बना हुआ है।

फिर भी भारतीय नारी के अन्दर जीजाबाई, दुर्गावती, रानी लक्ष्मी बाई, चाँद बीवी, मैडम कामा, दुर्गा भाभी की झलक ढूंढना हमारी मजबूरी है, क्योंकि एक तेवरीकार के लिए नारी विलासिता का खिलौना मात्र न होकर साक्षात दुर्गा स्वरूपा है। तथा कोठे पर घुंघरू बाँध कर मुजरा करने वाली चम्पाबाई के लिए गीत अथवा गजल लिखने के बजाय शाहबानो और रूप कुंवर जैसी असहाय भारतीय नारी की विवशता पर लिखना उसकी विवशता ही है। आप इसे दकियानूसी विचारधारा, कूप मण्डूकता, बैकवर्डनैस अथवा जो भी चाहे कह सकते हैं, लेकिन यह सच्चाई है कि सिर्फ नारीतन में सौन्दर्य तलाशने वाले विकृत हैं, सौन्दर्य के प्रति ना-समझ हैं।

पदलोलुप, पद-पुरस्कार तथा अभिनन्दन की भूख से बिलबिलाते हुए चारण रूपी साहित्यकारों का असली चेहरा उजागर करने की धृष्टता भी इस संग्रह में किसी स्थान पर की गई है। अतः हो सकता है कि उनका व्यूह-बद्ध विरोध या प्रकोप भी सहना पड़े। पर कहना गलत न होगा कि आज साहित्यकारों के एक प्रभावशाली वर्ग में साइकोफैंसी अपनी पराकाष्ठा तक पहुँच गई है।

नगर-नगर में फुटपाथों पर रेलवे स्टेशनों और बस स्टेशनों के बुक स्टालों पर खुले आम बिकने वाले सैक्स-अपराध सम्बन्धी साहित्य में युवावर्ग की बढ़ती हुई अभिरुचि, देश के भविष्य निर्माताओं के लिए खुली चुनौती है। परिष्कृत साहित्य की पुस्तकें आज पुस्तकालयों में धूल चाट रही हैं। आज जहाँ अपना देश ही नहीं सारा विश्व, सभी भौतिक सुविधाओं से युक्त इक्कीसवीं सदी की सुखद कल्पना में पलकें बिछाए अभी से अगवानी हेतु प्रतीक्षा में खड़ा है, ऐसे में देश के लाखों-करोड़ों असहाय व्यक्तियों के दुखदर्द की बात करना स्वयं को उन्नीसवीं सदी में ही धकेलना है, जिसे

हम सहज स्वीकारते हैं। तथा यह भी कि व्यावसायिकता की इस दौड़ में पाकेटबुक्स टाइप रोमांटिक उपन्यासों के लिखने के स्थान पर, देश की एकता पर लिखना कविता के कथित समझदारों की दृष्टि में अज्ञानता ही कही जाएगी। फिर भी, ऐसी ही अज्ञानता के तहत "देश खण्डित हो न जाए' आपके सम्मुख है।

कला साहित्य एवं अदब की नगरी अलीगढ़ के नाम की चर्चा किए बिना, मैं भला कैसे रह सकता हूँ, जहाँ के अत्यन्त युवा साहित्यकार अपनी पैनी लेखनी के माध्यम से गहन अंधकार में मशाल उठाए हुए आँधियों को चुनौती दिए जा रहे हैं, उनके सहयोग और मार्ग दर्शन का मैं मन से आभारी हूँ। "तेवरी-पक्ष" के प्रकाशक एवं सम्पादक मण्डल के सदस्यों को धन्यवाद दिए बिना मैं कैसे रह सकता हूँ ? जो मुझसे उम्र में छोटे होते हुए भी मुझसे बहुत बड़े हैं और उन्होंने बड़े होने का कर्तव्य पूरी तरह निभाकर मुझे नई दिशा दी है। अलीगढ़ के युवा साहित्यकारों के स्नेह के साथ-साथ कविवर नीरज एवं डॉ० रवीन्द्र भ्रमर का आशीर्वाद प्राप्त होना, मेरा परम् सौभाग्य ही कहा जाएगा।

हर क्षण प्रत्येक घटना को व्यावसायिकता से जोड़ने वाले मेरे कुछ मित्रों ने नेकसलाह दी थी कि मैं यह संग्रह व्यवस्था से जुड़ी किसी हस्ती को समर्पित करूँ, जिनसे संपर्क बढ़ने पर मैं व्यवसायिक लाभ प्राप्त कर सकूं, किन्तु इसे आप मेरी सनक कहें, या मेरे व्यक्तित्व की कोई विशेषता, मैं यह संग्रह उन वीर शहीदों को उनके चरणों में नतमस्तक होते हुए समर्पित कर रहा हूँ, जो अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु प्राणों का उत्सर्ग करते रहे हैं, जिनका कोई नाम तक नहीं जानता।

दर्शन बेजार

जयहिन्द !

२३ मार्च १९८९

एक

आदमी की हर कहानी दुखभरी लिखनी पड़ी
बात कहनी थी अतः, खोटी-खरी लिखनी पड़ी।

पंचतारा होटलों की दावतें उनके कथन
किन्तु मुझको तो वतन की भुखमरी लिखनी पड़ी।

कल गया बाजार लेकिन, ला न पाया सब्जियाँ
तब मुझे घर की व्यवस्था अधमरी लिखनी पड़ी।

जब गजल से पोंछ पाया मैं न आँसू की व्यथा
तब मुझे 'बेजार' होकर तेवरी लिखनी पड़ी।

**

दो

दीप बनकर तुम अँधेरा चीर दो
रोशनी की लिख नयी तहरीर दो।

है बहुत गहरी सियाही मुल्क में
दूर कर सबके हृदय से पीर दो।

मान्यताएँ अब न आगे कैद हों
रूढ़ियों की तोड़ हर जंजीर दो।

गुनगुना कर गीत सच्ची क्रांति के
अब बदल 'बेजार' की तकदीर दो।

**

तीन

जहाँ जहन में सिर्फ फसादी आलम हो
उस बस्ती में अमन कहाँ से कायम हो ?

लूटे थानेदार सड़क पर चोरों ने
लोगों के दिल की दहशत कैसे कम हो ?

काँटों में 'बेजार' बनाते राह वही
मरने-जीने का न कभी जिनको गम हो ?

आज जरूरत भगतसिंह की है फिर से
जो हाथों में लिये क्रान्ति का परचम हो ।

**

चार

भीड़ में गुमसुम खड़ा अब शान्त है
भाग्य में सच के लिखा एकान्त है।

देखने लायक थी हिम्मत कल तलक
पर बटोही आज कितना क्लान्त है ?

जो हमें तम में दिशा देता रहा
क्यों सितारा आज वह उद्भ्रान्त है ?

और साहस मूक कब तक यूँ रहे
धैर्य का इसने छुआ सीमान्त है।

अब पढ़ो 'बेजार' मन के पत्र को
क्रान्ति का इस पर लिखा वृत्तान्त है।

**

पाँच

वक्त की जालिम सलाखों में बहुत कुढ़ते रहे
हम किसी जख्मी परिन्दे की तरह उड़ते रहे।

आस्थाएं ले चलीं जाने कहाँ, जाने किधर ?
सिलसिले बरबादियों के हर घड़ी जुड़ते रहे।

जिस तरफ तारीकियाँ, तनहाइयाँ थीं पेशतर
खुद ब खुद मेरे कदम उस राह क्यों मुड़ते रहे ?

जिंदगी के पेड़ ने कुछ प्यार के फल क्या दिये
हम घृणा के पत्थरों से उम्रभर तुड़ते रहे।

**

छः

आस्था की देह में खंजर न गढ़ेगा
प्यार के अब गाल पर चाँटा न जड़ेगा।

दौर के मालिक जरा तू होश में आ जा
सुकरात का सच और अब सूली न चढ़ेगा।

आदर्श बनके छप रहे हैं झूठ आज जो
कल एक भी उन्हें न किताबों में पढ़ेगा।

आयी है अगर नाव जो बेवक्त भँवर में
'बेजार' लबे जाँ है पर तूफां से लड़ेगा।

**

सात

घायल हुई ऋचाएँ, जख्मी हैं आयतें
दीवार पर लिखी हैं लहू ने इबारतें।

अपने ही घर को आग लगाते रहे हैं हम
हमने ही लीं हैं मोल जमाने की आफतें।

पानी पे प्यार लिख दिया, बालू पे क्रान्तियाँ
हम मानते रहे कि हमने कीं बगावतें।

धोखा, फरेब, झूठ औ' मक्कारी बदचलन
हासिल हुई हैं हमको इसी में महारतें।

**

आठ

रोज हम नींद से यूँ जागे हैं
अपनी पहचान छोड़ भागे हैं।

वक्त की अंधी दौड़ में यारो
लँगड़े-लूले ही आज आगे हैं।

हमने इन्सानियत के जहनों में
शब्द गोली से रोज दागे हैं।

खुद के साये से हमको दहशत है
हम हैं इन्सान, सो अभागे हैं।

आज तस्वीरे-मुल्को-मिल्लत के
हो गये तार-तार धागे हैं।

**

नौ

जीत निश्चित है तुम्हारी तुम अभी हिम्मत न हारो
काँप सिंहासन उठेगा तुम तपस्या तो सँवारो।

वक्त के भागीरथो ! चट्टान की औकात क्या है ?
राह खुद देगा हिमालय, ठानकर गंगा उतारो।

कल नये युग का नया इतिहास तुम ही तो लिखोगी
मेरे मन की भावनाओ ! तुम जरा सोचो-विचारो।

हो बहुत 'बेजार' अर्जुन न्याय के कुरुक्षेत्र में अब
आ गया है वो समय तुम क्रान्ति की गीता उचारो।

**

दस

व्यर्थ है अभिव्यंजना सिंगार की
चाँदनी मेहमान है दिन चार की।

नायिका जो दिवस-भर भूखी रही
क्या करेगी अर्चना अभिसार की ?

रोटियाँ पहले मुहैया कीजिए
फिर गजल फरमाइएगा प्यार की।

'वक्त' का मुँह तोड़ने का वक्त है
धार पर चलते रहो तलवार की।

मिल गयी स्याही इसे आक्रोश की
अब कलम रँग लायेगी 'बेजार' की।

**

ग्यारह

फूट के अब पाँव हम जमने न देंगे
एकता के वृक्ष को कटने न देंगे।

झूठ के हर हाथ में चिंगारियाँ हैं
किन्तु 'सच' का गाँव हम जलने न देंगे।

विप्लवों के रक्त से सींची जमीं पर
भीरुता को फूलने-फलने न देंगे।

व्याकरण जो गढ़ रहा है रोशनी का,
वह दिया 'बेजार' का बुझने न देंगे।

**

बारह

लोग जब सच के लिए मरने लगेंगे
प्यार का इतिहास तब गढ़ने लगेंगे।

'सोच' की गर लाठियाँ ले, हम बढ़ें तो
राह से विषधर सभी हटने लगेंगे।

आग-सा दहका हुआ मन साथ हो तो
पाप के सब हिम-शिखर गलने लगेंगे।

तब विशेषण नेह के होंगे सुरक्षित
जब सभी मिलकर कदम उठने लगेंगे।

**

तेरह

वेदना में यूँ पला वातावरण
ज्यों 'सिसकते-छन्द' के सारे चरण।

मूक जिसको पीढ़ियाँ ओढ़े रहीं
कब हटेगा टीस का वह आवरण ?

एक भाषा प्यार की तैयार कर
यूँ न गढ़ तू भ्रान्तियों का व्याकरण।

माँगती है न्याय जन-जन की व्यथा
सत्य का कब तक करोगे अपहरण ?

बस यही अनुभव किया है आजकल
भूख के घर आत्मा का जागरण।

**

चौदह

यह कैसा उन्माद धर्म का ?
घर-घर वाद-विबाद धर्म का।

चारों ओर घृणा की आँधी
पनपा घोर विषाद धर्म का।

सबसे बड़ा धर्म मानवता
मर्म न हमको याद धर्म का।

अब तो नफरत की होली ने
जला दिया प्रह्लाद धर्म का।

दुराचार जब भी फूला है
उसे मिला है खाद धर्म का।

हम सुनने को तरस गये हैं
प्यार-भरा संवाद धर्म का।

**

पन्द्रह

खून इन्साँ का सड़क पर बह रहा है
धर्म की हिंसक कहानी कह रहा है।

रेत जैसी आस्थाओं पर खड़ा था
हर महल विश्वास का अब ढह रहा है।

अब परिन्दे किस जगह जा सिर छुपाएँ ?
आग में सारा चमन ही दह रहा है।

और कोई भी नहीं 'बेजार' है वह
हादिसे जो मुस्करा कर सह रहा है।

**

सोलह

लाश के ऊपर टिका जिसका तखत
क्या सुनेगी आह ऐसी सल्तनत ?

दौर खूँरेजी का है माना, मगर
नादिरी खंजर भी होंगे भूमिगत।

दूर कोसों सत्य से वह आचरण
खून करना हो महज जिसकी सिफत।

'सत्य' बनकर गर पुजा अब झूठ तो
करके मानेंगे उसे घोषित गलत।

हम नहीं आदी रहे विद्वेष के
'प्रेम' को 'बेजार' ने पूजा फकत।

※※

सत्रह

वेदनाओं को समर्पित जिन्दगी
हर खुशी से आज वंचित जिन्दगी।

सिर्फ खण्डहर की तरह विश्वास हैं
किस तरह अब हो व्यवस्थित जिन्दगी ?

सामना सच्चाईयों से क्यों करें ?
जी रहे जब लोग कल्पित जिन्दगी।

यातनाओं के शिविर में आजकल
युद्धबन्दी-सी अर्चचित जिन्दगी।

स्वार्थों की खाइयों में क्या गिरे ?
हो गयी खुद से अपरचित जिन्दगी।

**

अठारह

हर तरफ पड़ते सुनाई बेसुरे-से राग
सभ्यता के नाम पर हैं सिर्फ खूनी फाग।

हर तरफ कायम हुए हैं लूट के आदर्श
देश की खातिर यहाँ अब कौन करता त्याग?

स्वार्थों की रोटियाँ अब सब रहे हैं सेंक
भाग्य से उनके लगी है गैर के घर आग।

त्रासदी यह मुस्करा क्यों सह रहे हैं आप?
आप के कोमल बदन को डस रहे नाग।

रामराज्यी स्वप्न सारे हो गये बेजार
नौजवाँ मेरे वतन के नींद से अब जाग।

**

उन्नीस

अन्याय के शैतान का सिर धड़ से उड़ा दो
'हम जुल्म के खिलाफ हैं' दुनियां को दिखा दो।

मजहब का नाम लेके जमीं बाँटने वाली
हो चाहे हसीं, किन्तु वो दीवार गिरा दो।

जो कायरों की व्यंजना को व्यक्त करता हो
उस शब्द के भीतर जरा बारुद बिछा दो।

और अब होने न देंगे देश के सौदे
इन देश के सौदागरों को आज बता दो।

बर्फ भी देने लगेगी आग के भाषण
'बेजार' इस माहौल को तुम गर्म बना दो।

**

बीस

मुफलिसी में भूख हद से बढ़ गयी
पेट में कीलें अनेकों जड़ गयी।

प्यार का मतलब बचा बस रोटियाँ
प्यार की भाषा अनोखी गढ़ गयी।

थीं अभावों की चहकती महफिलें
जिन्दगी जिनमें अकेली पड़ गयी।

कौन अब किसकी सुरक्षाएँ करे ?
कोतवाली में डकैती पड़ गयी।

**

इक्कीस

ढेर सारी रोशनी दिखती जिधर
आदमी क्यों मिल रहा अन्धा उधर ?

देखिए इस दौर में सद्‌भाव का
खून से जबड़ा सना आता नजर।

रोंद डाली बाढ़ ने इन्सानियत
धर्म की नदियों में जब उट्‌ठी लहर।

आप इसको शान्त होकर बाँचिए
खौफ में डूबा हुआ 'खत' है शहर।

**

बाइस

धूप में क्यों हैं बटोही अनमने ?
आगे चलकर हैं बहुत साये घने।

वे सही अर्थों में हिन्दुस्तान हैं
फुटपाथ ही जिनके लिये हैं घर बने।

अब सहे जाते नहीं आघात ये
कह दिया उस रोज भूखे पेट ने।

वक्त के हाथों व्यवस्था की छुरी
और हम ऐसे खड़े, ज्यों मेमने।

**

तेईस

हम मिले जिनसे कुछ प्यार के अक्षर लेकर
राह में बैठे हैं वही अर्थ के खंजर लेकर।

झूठ कैसे सामना करता है, हम देखें जरा ?
कह रहा है सत्य ये अब हाथ में पत्थर लेकर।

किसमें हिम्मत जो जिये शिव की तरह साथी
कौन मुस्काता है अब कण्ठ में जहर लेकर ?

मेरे मेहमान ही घर आके मुझे लूट गये
मैं उन्हें ढुँढ़ता फिरता हूँ निगहतर लेकर।

होके मायूस जमाने की मेहरबानी से
जिन्दगी फिर उड़ी 'बेजार' कटे 'पर' लेकर।

**

चौबीस

और कब तक धैर्य को बाँधे रहें ?
जुल्म जो होते रहें, सब कुछ सहें ?

होंठ हैं गर होंठ, 'ना' कह जायेंगे
आपके संग लाख हाँ मैं हाँ कहें।

हम नहीं, जो स्वार्थी हों वे सुनें
जिस तरफ की हो हवा, उसमें बहें।

अब नहीं होगा सहन ये सिलसिला
धूल की जमती रहें हम पर तहें।

मानते हैं शक्ति-स्तुति धर्म है
धूर्त को पर देवता कैसे कहें ?

**

पच्चीस

खून के धब्बे न अब तक सूख पाये
आ गये फिर लोग लो खंजर उठाये।

रोशनी की बात करता जो सभा में
सैकड़ों घर के दिये उसने बुझाये।

रक्तरंजित हो गयी क्यों ये धरा तब ?
हर किसी ने गौतमी नारे लगाये।

हो जहाँ आदर्श हिंसा और मातम
आपको ऐसे तराने रास आये।

शहर की खामोश आँखें कह रही हैं
खून की कोई न अब नदियाँ बहाये।

**

छब्बीस

एक सन्नाटा घना फैला हुआ
शहर दहशत में मिला डूबा हुआ।

लाश जैसी हर जगह है जिन्दगी
गिद्ध है उस पर कोई बैठा हुआ।

क्या करे चर्चा कोई खुशियों की अब ?
हर नजर में ख्वाब है भीगा हुआ।

जब ठहाके मौत के गूँजे यहाँ
'बेजार' को देखा गया सहमा हुआ।

**

सत्ताईस

क्रान्ति का करने लगेगा जाप मेरा देश
ढूँढ लेगा राह अपने आप मेरा देश।

कल खुशी के दौर में भी देखना इसको
सह रहा माना अभी संताप मेरा देश।

अब न हत्याएँ करे कोई मोहब्बत की
शान्ति का छेड़े मधुर आलाप मेरा देश।

लाख है बेजार लेकिन जुल्म के आगे
रह न पायेगा कभी चुपचाप मेरा देश।

**

अट्ठाईस

बाँटनी चाही अगर धरती हमारी
खाक में मिल जायेगी हस्ती तुम्हारी।

हम से बढ़कर कौन होगा स्वाभिमानी ?
हैं सभी की मित्रता के हम भिखारी।

जिसमें इन्सां के सिवा कुछ भी नहीं है
आरती उस धर्म की हमने उतारी।

शान्ति को मजबूर मत करना, नहीं तो
थाम लेगी हाथ में वह भी दुधारी।

सिर्फ नफरत में जिये जो, वे सुनें अब--
प्यार का हमने किया जयघोष जारी।

**

उन्तीस

चल रहे कैसे इशारे हर तरफ ?
फिर दिखे खूनी नजारे हर तरफ।

पाप की काली घटाएँ क्या उठीं ?
सच के डूबे चाँद-तारे हर तरफ।

बन गये हैं अब प्रतिष्ठा के प्रतीक
लाठियाँ, भाले हमारे हर तरफ।

देश की खातिर कोई आया नहीं
'बेजार' ने कितने पुकारे हर तरफ ?

**

तीस

जो उसूलों के लिये सम्बल रहा
आदमी अब हाथ अपने मल रहा।

बेच पाया जो न आखों की शरम
दर्द उसकी जिन्दगी में पल रहा।

आस्था-श्रद्धा के सँग वो क्या पुजा ?
देवता बन हर किसी को छल रहा।

कर रहे नीलाम जो मेरा वतन
दौर ऐसे जाहिलों को फल रहा।

सच मसीहा की तरह सूली चढ़ा
सिलसिला यह मुद्दतों से चल रहा।

**

इकत्तीस

इस दौर में सबको पड़े जब जान के लाले
ढहती हुई दीवार भला कौन सँभाले ?

हमदर्द कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ता
जो इस अशक्त देश को काँधों पे उठाले।

रक्त-पिपासू जहाँ रहते सदा काँटे
उस राह के आदी हुए हैं पाँव के छाले।

अब हो गये हैं आग से जब फूँस को खतरे
बादल है अगर तू तो, इस बस्ती को बचाले।

हद जुल्म को सहने की भी होती है सितमगर
डर है कहीं 'बेजार' भी खंजर न उठा ले।

**

बत्तीस

जो बन जनसेवक अब आये
उनसे भइया राम बचाये।

आदर्शों की, नैतिकता की
सब बैठे दूकान लगाये।

कहाँ भूख मिटती रोटी से ?
हर कोई अब चन्दा खाये।

नाली में वो धुत्त पड़ा है
जो गान्धी जी की जय गाये।

अपने ही जब रक्तपिपासू
अब 'बेजार' कहाँ बच पाये ?

**

बत्तीस

जो बन जनसेवक अब आये
उनसे भइया राम बचाये।

आदर्शों की, नैतिकता की
सब बैठे दूकान लगाये।

कहाँ भूख मिटती रोटी से ?
हर कोई अब चन्दा खाये।

नाली में वो धुत्त पड़ा है
जो गान्धी जी की जय गाये।

अपने ही जब रक्तपिपासू
अब 'बेजार' कहाँ बच पाये ?

**

तेतीस

शब्द–अर्थ कंगाल हो गये
और कथ्य भ्रमजाल हो गये।

बस लिखते हैं चरण वन्दना
हम दरबारी लाल हो गये।

अभिनन्दन की बात चली तो
गूंगे तक वाचाल हो गये।

झूठ-कथाएं सत्य हो गयीं
साखी–सबद हलाल हो गये।

बने विदूषक और भाट तो
पल में मालामाल हो गये।

**

चौंतीस

भूख ने कुछ सिलसिला ऐसा दिया
आदमी ने सत्य को ही खा लिया।

जिस्म तक मजबूर बिकने को हुए
रे अभागे पेट तूने क्या किया।

और भी उधड़ी खुशी की दास्ताँ
दर्द ने दामन किसी का जब सिया।

छटपटाई जिंदगी तब-तब यहाँ
आदमी ने जब कभी अमृत पिया।

हाशिया बन उम्र सारी गल गयी
आदमी जितना जिया यूँ ही जिया।

**

पैंतीस

की थी राम राज्य से आशा
हाथ लगी बस घोर निराशा।

आज एकता के हामी ही
बोल रहे विग्रह की भाषा।

जिसे बात करनी थी सुख की
गढ़ता है दुख की परिभाषा।

रोटी के बदले आश्वासन–
कब तक देखें यही तमाशा ?

यह बेजारी कब जायेगी
मन में रही यही अभिलाषा।

**

छत्तीस

तुहमतें मेरे न सर पर दीजिए
झुक न पायेगा, कलम कर दीजिए।

खुल नहीं सकते अधर ये झूंठ को
जख्म से सीना भले भर दीजिए।

रुक न पायेंगी उड़ानें 'सोच' की
काट बेशक आप ये पर दीजिए।

सत्य के प्रति और भी होंगे मुखर
आप कितने भी हमें डर दीजिए ?

**

सैंतीस

रिश्ते–नाते गले हुए हैं
मन स्वारथ में ढले हुए हैं।

दस्तावेज आस्थाओं के
राख–राख हैं, जले हुए हैं।

सम्बन्धों की दूकानों पर
खोटे सिक्के चले हुए हैं।

मन के कोढ़ छुपाने वाले
तन पर चन्दन मले हुए हैं।

आज रोशनी से खतरे हैं
सब सूरज के छले हुए हैं।

**

अड़तीस

इस तरह भी जुल्म हम सहने लगे
कातिलों को ही खुदा कहने लगे।

कर दिये जिसने हजारों घर तबाह
हम वही सैलाब बन बहने लगे।

जिस हवा से जल उठा सबका चमन
हम उसे वादे–सवा कहने लगे।

ढूंढ़ता था जो हमें खंजर लिये
आज हम उस हाथ को गहने लगे।

टाँगकर कुछ तख्तियाँ विद्रोह की
लोग कायर की तरह रहने लगे।

**

उन्तालीस

और आगे देश के टुकड़े न हों
भाइयों में भ्रान्ति से झगड़े न हों।

अंगदी विश्वास मन में लाइये
एकता के पाँव अब उखड़े न हों।

घर न हिंसा में जले कोई यहाँ
आग से झुलसे हुए मुखड़े न हों।

कौन कर देगा हमें गुमराह तब ?
रूढ़ियों में हम अगर जकड़े न हों।

हो सके तो अब उन्हें दुत्कारिये
रोशनी का हाथ जो पकड़े हों।

**

चालीस

सिर्फ स्याही मुल्क में भरने लगा
दीप किरणों को यहाँ डसने लगा।

कल तलक विद्रोह के स्वर में रहा
अब प्रशस्तीगान वह रचने लगा।

कत्ल नैतिकता का करके आदमी
आचरण का भागवत् रटने लगा।

आत्महन्ता हो न जाए रोशनी
झूठ ही जब सत्य बन पुजने लगा।

**

इकतालीस

तोड़ेंगे हम एक दिन, पाँव पड़ी जंजीर
दर्द नहीं छलकायेगा, तब आँखों से नीर।

हमको ही करना यहाँ, नवयुग का निर्माण
हमीं गढ़ेंगे साथियों, खुद अपनी तकदीर।

दुःशासन फिर खेलता छल-प्रपंच के खेल
हरण न हो जाये कहीं पांचाली का चीर।

कल तैरेगी अधर पर, तेरे भी मुस्कान
क्यों होता है इस तरह मेरे देश अधीर?

**

बयालीस

कुलटा और कलंकिन, निर्लज बता-बता कर राख किया
हमने हर दिन अबलाओं को जला-जलाकर राख किया।

हम क्या जानें कितनी चीखी, कितनी रोयी होंगी वो ?
दहकी हुई चिता पर जिनको, रोज बिठाकर राख किया।

समझ न पाये मर्म धर्म का, हम आदिमयुग के वासी
नारी को धर्मों का हमने जाल बिछाकर राख किया।

भूखे पेट रखा बिन पानी, सोने जैसी काया को
और इस तरह धनलोभी ने, उसे जलाकर राख किया।

जिसके जीवन को हम सुख का दे न सके कोई सपना
हमने उसको अपना पौरुष जता-जताकर किया।

**

तेतालीस

खुदकशी करली हमारे प्यार ने
इस लिये हम आपसी तकरार ने।

गोलियाँ दे दीं जहर की उस समय
जब मदद चाही किसी बीमार ने।

कर दिये टुकड़े वतन के दोस्तों !
जाति भाषा धर्म के उपचार ने।

हाथ इस हद तक हमारा खुल गया
हम लगे सच्चाइयों को मारने।

हर तरफ था बस उदासी का मुकाम
तेवरी जब भी कही 'बेजार' ने।

**

चौवालीस

नींद के यदि गीत हम सब गायेंगे
दुश्मनों के हौसले बढ़ जायेंगे।

जो नहीं पढ़ते समय की त्रासदी
वासना की जाँघ ही सहलायेंगे।

भेड़िये सरपंच हों जिस गाँव के
मैमने कैसे वहाँ बच पायेंगे ?

वक्त ऐसा है कि रहिए जागते
लोग वर्ना 'सच' कतल कर जायेंगे ?

**

पेंतालीस

पा दर्दों का प्यार जिन्दगी
हुई बहुत बेजार जिन्दगी।

गजरा, खुशबू, फूल, नहीं अब
तेग और तलवार जिन्दगी।

करती रही देह के सौदे
भूखी औ' लाचार जिन्दगी।

जहाँ अपरचित-सा हर कोई
है ऐसा घरबार जिन्दगी।

आज अगर चिंगारी है तो
कल होगी अंगार जिन्दगी।

**

छियालीस

नफरत को आग लगा डालो
जुल्मों की नींव हिला डालो।

अन्याय द्वेष की दुनिया का
जड़ से अस्तित्व मिटा डालो।

जहाँ अस्मतें लुटती हों
वह बस्ती आज जला डालो।

मंजिल खुद ही मिल जायेगी
काँटों में राह बना डालो।

'बेजार' नयायुग लाने को
अपना सर्वस्व लुटा डालो।

संतालीस

जख्मों पे तेजाब की बारिश बोलो कब तक यूँ होगी ?
सच को झुलसाने की कोशिश बोलो कब तक यूँ होगी ?

अधरों की सच्चाई आँसू बन आँखों से बहती है
हर जुबान पर ऐसी बन्दिश बोलो कब तक यूँ होगी ?

उसकी उर्दू, इसकी हिन्दी, मिलकर जब हिन्दुस्तानी
भाषा से भाषा की रंजिश बोलो कब तक यूँ होगी ?

जो चंगेजी 'सोच' लिये, बस्ती–बस्ती को कत्ल किये
उनसे करुणा भरी गुजारिश बोलो कब तक यूँ होगी ?

सूखे हुए धान जैसे जिसकी आँखों में सपने हों
उस बस्ती की दुश्मन आतिश बोलो कब तक यूँ होगी ?

**

अड़तालीस

ध्यान रखना नौजवानो ! देश खण्डित हो न जाए
शान्ति का पर्याय भारत रक्तरंजित हो न जाए।

वीर पृथ्वीराज की सन्तान हो तुम देशवालो
फिर किसी जयचन्द का इतिहास चर्चित हो न जाए।

आन पर माँ के वचन की, मर मिटो बनकर शिवाजी
आज जीजाबाइयों का दूध लज्जित हो न जाए।

पुत्र तक दीवार में चिनवा दिये गुरु ने यहाँ पर
नाम ऐसे धर्म का हर्गिज कलंकित हो जाए।

हो तुम्ही बिस्मिल, भगतसिंह, चन्द्रशेखर की तरह
'सरफरोशी की तमन्ना' तुमसे वंचित हो न जाए।

**

तेवरी विधा के पाँच महत्त्वपूर्ण संकलन

१—अभी जुबाँ कटी नहीं,	संपा० रमेशराज,	मू० पाँच रु०
२—कबीर जिन्दा है,	संपा० रमेशराज,	मू० दस रु०
३—इतिहास घायल है,	संपा० रमेशराज,	मू० पाँच रु०
४—एक प्रहार: लगातार,	कवि-दर्शन बेजार,	मू० पाँच रु०
५—देश खण्डित हो न जाए,	कवि-दर्शन बेजार,	मू० दस रु०

प्राप्ति स्थल :-

सार्थक सृजन प्रकाशन, १५/१०६, ईसानगर, अलीगढ़ ।